RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary 2021; 6(3):177-180
ISSN: 2455-3085 (Online)
https://doi.org/10.31305/rrijm.2021.v06.i03.026
Research Paper
Double Blind Peer Reviewed/Refereed Journal
https://www.rrjournals.com/

धर्मवीर भारती जी की कनुप्रिया का वर्तमान परिदृश्य

*डॉ. विद्या शशिशेखर शिंदे

आय.सी.एस. कॉलेज, खेड, खोंडा, भडगांव, ता. खेड, रत्नागिरी, 412709, महाराष्ट्र

ABSTRACT

कनुप्रिया की सार्थकता उसी में है जहॉ राधा अपने मन के प्रश्न उपस्थित करके हमें विचार करने के लिए बाध्य करती हैं। युद्ध किसी भी समस्या का हल नहीं हैं। प्रेम ही शाश्वत सत्य हैं। जब कृष्ण जैसा अवतारवादी पुरुष एक ही जीवन में दोहरा आचरण करता है तो प्रश्न उपस्थित होना स्वाभाविक हैं।आधुनिक काल में मानवी जीवन इसी संघर्ष में बीत रहा हैं।आज हर कोई चाहता है कि मूल्य के साथ जिंदगी बिताए मगर अवसरवादी मोह के क्षण जीवन को धोका दे रहे हैं। ऐसे समय पर आत्मा परमात्मा का संघर्ष हर मन की व्यथा हैं। जंगल काटना, पानी को अपवित्र बनाना, युद्ध करना कोई नहीं चाहता मगर अनेक खोखले कारण बताकर उसका महत्व बढाया जा रहा हैं।जैसे की कृष्ण अपने आचरण का कारण कर्म,स्वधर्म,निर्णय, दायित्व जैसे शब्दों के द्वारा प्रकट करता हैं।मगर इन सारे शब्दों का हमें सही अर्थ जानना होगा।माता पिता के प्यार को भूलकर अपने नीजी स्वार्थ हेतु जब बच्चे विदेश में रहते है और अपने कर्तव्य को भूल जाते हैं तब माता पिता के हदय को जो पीडा होती हैं वही दु:ख राधा के हर प्रश्न में छिपा हैं।राधा के माध्यम से आज विश्व में शांति लाने के लिए प्रेम ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग बताया गया हैं।

Keywords: *कनुप्रिया के माध्यम से प्रेम का महत्व*

Article Publication

Published Online: 15-Mar-2021

***Author's Correspondence**

डॉ. विद्या शशिशेखर शिंदे

आय.सी.एस.कॉलेज,खेड, खोंडा,भडगांव,ता. खेड, रत्नागिरी,412709,महाराष्ट्र

✉ vidyashindesha[at]gmail.com

© 2021The Authors. Published by *Research Review Journals*

This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

प्रास्ताविक–

आधुनिक काल के रचनाकारों में डॉ.धर्मवीर भारती श्रेष्ठ साहित्यकार के रुप में प्रतिष्ठित हैं। 'कनुप्रिया' यह काव्यकृति भारती जी की अनूठी और अद्भूत कृति हैं। जिसमें कनु की प्रिया अर्थात राधा के मन में कृष्ण और महाभारत के पात्रों को लेकर चलनेवाला काव्य हैं। 'कनुप्रिया' कृति हिंदी साहित्य और भारती जी के लिए 'मील का पथ्थर सिद्ध हुई। कनुप्रिया के उपर अनेक विद्वानों के बीच चर्चा हुई मगर 'कनुप्रिया' का काव्य प्रकार अब तक कोई भी समीक्षक निर्धारित नहीं कर पाया कि यह महाकाव्य है,या खंडकाव्य!उसे गीतिकाव्य कहे या गीतिनाटय! परिणामतः 'कनुप्रिया' निश्चित रुप से किस काव्यवर्ग के अंतर्गत आती है यह कहना कठिन है। कुछ आलोचकों के अनुसार 'कनुप्रिया' में भारती जी ने सर्ग के रुप में गीत दिए हैं परंतु इन गीतों को अलग अलग रुप में देखे तो यह अपने आप में पूर्ण लगते हैं। इसमें जीवन के किसी एक पक्ष का उद्घाटन नहीं होता। राधा के मानसिक संघर्ष व्यक्त किया हैं। अतः 'कनुप्रिया' को खंडकाव्य की कोटी में नहीं रखा जा सकता। डॉ. धर्मवीर भारती जी ने स्वयं इसपर कोई अपना मंतव्य व्यक्त नहीं किया. सच कहा जाय तो कनुप्रिया में भावों की धारा बहती हुई दिखाई देती हैं। इसलिए इसे भाव अनुभूती का काव्य कहा जा सकता हैं।

'कनुप्रिया' में चित्रित राधा का व्यक्तित्व अनेक विलक्षण गुणों का मिलन का केंद्रबिंदू है –उसमें जहॉ एक ओर वैष्णवी संस्कारों के अनुरुप राधा प्रेमाशक्ति है, वहां उसमें सिद्धों की सांकेतिक रति–अनुभूती भी है। दूसरी ओर अनास्थावादी क्षणवादीयों का भोग का बिंब है जो आज जीवन के भागदौड में खडी प्रश्नाकुल मुद्रा में वह पुछती है कि,इतिहास के निर्माण के क्षणों में अब तक नारी के द्वारा नाना रुपों में दिये गये योगदानों की जानबुझकर क्यों उपेक्षा की जा रही हैं?

नारी शक्ति का प्रतिकः कनुप्रिया'

राधा कृष्ण की आंतरिक शक्ति है, वह साकार प्रेमाभक्ति है। वह कृष्ण के लिए निरंतर प्रेरणा और अनुभूती की शक्ति है। वह निश्छल सहज प्रेम तथा समर्पण का एक ज्वलंत प्रतिक हैं। एक पौराणिक आख्यान के अनुसार एक बार रुक्मिणी ने कृष्ण से पूछा कि राधा में ऐसी क्या बात है जो आपको सर्वप्रिय लगती है? तब कृष्ण ने कहा कि उचित प्रसंग पर तुम्हें इस तथ्य से अवगत करा देंगें। एक दिन कृष्ण शिरोवेदना से त्रस्त लेट गये थे तब उन्होंने रुक्मिणि से कहा कि यदि आप अपनी पाद–रज को मेरे मस्तक पर मल दे तो आराम आएगा. तब रुक्मिणि ने इन्कार कर दिया और कहा कि,ऐसा करने से सात जन्मों तक नरक भोगना पडेगा। इस संदर्भ में सत्यभामा का भी यही उत्तर था। तब कृष्ण ने नारद को राधा के पास भेजा। राधा ने नारद की बात सुनकर विनम्रता से कहा कि, यदि मेरी पाद–रज से कृष्ण को शिरोवेदना से मुक्ति मिलेगी, तो तुरंत मै यह करने के लिए तैयार हूँ। उसके बदले में सत्तर जन्मों तक नरक में रहना पडे तो मुझे परवाह नहीं।प्रेममात्र निःस्वार्थ समर्पण हैं। उसमें आदान–प्रदान का व्यापार नहीं होता हैं। राधा उस महाभाव का प्रतिक हैं,जहां जीवात्मा का उस परब्रम्ह में सर्वथा भाव से समर्पण तथा विलीनीकरण होता हैं। वहां हीनता नष्ट हो जाती हैं। राधा,सखी, सहचरी,राधिका सभी रुपों मे पूर्ण समर्पिता हैं। उसका भीतर–बाहर,उपर–अधर और अगल बगल सबकुछ कृष्ण के लिए अर्पित हैं। कृष्ण उसके अंतरंग सखा हैं। प्रेमी,स्वामी,बंधु,शिशु सबकुछ हैं। राधा पूर्ण अतृप्ति है और कृष्ण भी चिरंतन अतृप्ति हैं। राधा अतृप्त इसलिए है कि इतिहास के निर्माण के क्षणों में उसे क्यूँ भूला दिया गया? आज की नारी अब भी प्रश्नाकूल है कि इतिहास के निर्माण में वह उपेक्षित क्यूँ है? इतिहास व्यष्टि और समष्टि दोनों का मिलन हैं। नारी जो श्रद्धा,ममता,करुणा,प्रणय का निष्कलुष पुंज हैं। फिर उसे क्यूँ भुलाया जा रहा हैं? कनुप्रिया के शब्दों में–

और जन्मान्तरों की अनंत पगडंडी के
कठिनतम मोड पर खडी होकर
तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हूँ
कि इस बार इतिहास बनाते समय
तुम अकेले न छूट जाओ।1

भारती जी ने कृष्ण के चरित्र को शासक कूटनीतिज्ञ और व्याख्याकार आदि अनेक रुपों में इतिहास के पटल में देखने की चेष्टा की हैं। दिनकर जी ने 'कुरुक्षेत्र' में युधिष्ठिर और भीष्म के माध्यम से युद्व और शांती विषयक नाना प्रश्नों का समाधान किया हैं। कनुप्रिया में राधा के माध्यम से कुछ इसी प्रकार के प्रश्न ,संशय और आग्रह उपस्थित किये गये हैं। नारी नर की केवल वासना संगिनी ही नहीं हैं प्रत्युत युगेतिहास की विधायिनी भी हैं।

कनुप्रिया यह एक महनीय कृति हैं। इसमें राधा और कृष्ण के पौराणिक प्रेमाख्यान को वर्तमान युग सापेक्ष एक नवीन संदर्भ में उपस्थित किया गया हैं. लेखक ने अपनी रचना को पूर्वराग,मंजरी–परिणय,सृष्टी संकल्प, इतिहास और समापन आते है। इन दोनों अध्यायों में राधा के प्रणय को एक नया परिप्रेक्ष्य दिया हैं। पूर्वराग, मंजरी–परिणय, सृष्टी संकल्प तथा केलिसखी आदि में शक्तिरुपिणि राधा की विविधमुखी बाहय आसक्ति अनेकविध आयामों में चित्रित हैं। राधा का पूर्वरागजनित प्रणय सर्वत्र प्राणों में स्पंदित हैं। परिष्कृत कलात्मकता,सांकेतिकता और सूक्ष्मता कनुप्रिया के प्रणय चित्रण की महत्वपूर्ण उपलब्धियॉ हैं। इसे प्रथम खंड कहा जा सकता हैं। द्वितीय खड में इतिहास और समापन दोनों आते हैं। इन दोनों अध्यायों में राधा के प्रणय को एक नया परिप्रेक्ष्य प्रदान किया हैं। कवि ने राधा के मन के संघर्ष के चित्रण में मानव जीवन की आज की समस्याऍ, युद्ध, व्यष्टि,समष्टि,नर–नारी के जीवन के चिरसंबंध तथा प्रणय लक्ष्य आदि को नवीन रुप में प्रस्तुत किया गया हैं। इस रचना की आत्मा राधा के अन्तर्द्वंद्वातम स्वगत प्रश्नों में सजीव रुप से व्यक्त होती हैं–

सुनो कनु सुनो
क्या मैं सिर्फ एक सेतु थी
तुम्हारे लिए
लीला–भूमि और युद्ध क्षेत्र के
उल्लंध्य अंतराल में।2

कनुप्रिया का नामकरण कान्ह याने कनु की प्रिया राधा पर आधारित हैं। इसकी कथावस्तू के सूत्र अत्यंत क्षीण हैं।जिनमें रागात्मक तत्व की अपेक्षा विचार तत्व की प्रधानता हैं। कथानक में राधा के पूर्वराग की मधुर स्मृतियॉ,केलिसुख का वर्णन, विरह का सुखद चित्रण तथा महाभारत कालीन युद्ध के इतिहास का युग की सापेक्षता का चिंतन व्यक्त होता हैं। कवि की मान्यता है कि

इतिहास का अर्थ मात्र समष्टि का संकेतन ही नहीं है, बल्कि उसमें व्यक्ति भी संपृक्त हैं। उसमें प्रत्येक क्षण का अपना महत्व हैं। राधा का भावविभोर चरित्र कवि की एक अनुपम सृष्टि हैं। इसमें कवि की सहज प्रतिभा, कल्पना और अनुभूती स्पष्ट होती हैं। परिणामतः कनुप्रिया में एक सहज आकर्षण स्तुत्य भाव, संप्रेषण तथा हदय द्रवण की पर्याप्त मात्रा विदयमान हैं। कवि ने कृष्ण काव्य परंपरा का निर्वाह करते हुए 'कनुप्रिया' के माध्यम से युगीन संदर्भो का विश्लेषण प्रस्तुत किया हैं। परंपरागत राधा–कृष्ण की जोडी को, उनकी प्रणय गाथा, राधा के प्रणय भाव को इस कृति का आधार बनाया हैं। मिथकीय कथा वस्तु में नायिका की संवेदना भरी बेचैनी और छटपटाहट हैं। कनुप्रिया की कविता अधिकतर अप्रकट या ओट में छिपी हुई पौराणिक गाथा ही हैं,यदयपि उसका प्रभाव अधिकतर विशिष्ट अर्थदीप्ति के साथ अप्रतिहत हैं, पर प्रत्यक्ष रुप से वह बिंब,प्रतिक और स्मृति प्रसंगों की कविता हें।

विषयगत संवेदना–

कनुप्रिया में नर–नारी के संबंध,परुष और प्रकृति के संबंध,कवि और कविता के संबंध,प्रेम और समाज के संबंध इन सभी समस्याओं का भावात्मक विश्लेषण किया हैं। कनुप्रिया में हमें दो केंद्र बिंदू मिलते हैं। क्षण और सहज कनुप्रिया कृष्ण की प्रिया हैं,उसमें शौर्य सुलभ मनःस्थिति विदयमान हैं। जो विवेक से अधिक तन्मयता, इतिहास की उपलब्धियों से अधिक सहज जीवन में सार्थकता पाती हैं। कनुप्रिया मे राधा का मुखौटा जड नहीं हैं गतिशील हैं। शुरु से अंत तक कवि ने राधा को अपना स्वर दिया हैं। 'पूर्व राग' के पॉचों गीत कवि की विषयगत संवेदना को प्रकट करते हैं, प्रतीक्षारत छायादार अशोक वृक्ष जो कनुप्रिया की प्रतिक्षा मे कई जन्मों से पुष्पहीन खडे है, राधा के असीम सौंदर्य,नारी सुलभ लज्जा एवं पुलक का सुक्ष्म चित्रण हुआ हैं। कनु का प्रेम आत्मा का प्रेम है,समर्पण का प्रेम है। इन गीतों में राधा के प्रेम की सुंदर अभिव्यक्ति हैं। राधा के प्रेम में निश्छल भावनाओं की स्थिति हैं, प्रकृति के कण कण में कनु की छबि देखना, यमुना में नहाते समय कृष्ण को निहारना, गृहकार्य से अलसाकर कदंब की छाया में शिथिल अनमनी पडी रहना जैसे अनेक भाव चित्रण मिलते हैं।

मंजरी परिणय में वह अतीत की मनःस्थितियों के द्वारा कवि के रोमानी भावबोध को हमारे सामने रखती हैं। प्रश्नाकुलता और निजता का मानसिक संघर्ष कृति के शुरु में कई गयी भूमिका को याद दिलाते हैं। राधा का मानसिक संघर्ष वस्तुतः आज के मानव का संघर्ष हैं। इतिहास खंड में फैटसी का प्रयोग हुआ हैं। वर्तमान को समझने के लिए वह स्थितियों को निजी राग द्वेष के साथ व्यक्त करती हैं। कनु की प्रिया जिसके हदय में प्रतिक्षण कनु ही व्याप्त हैं।ऐसी कनुप्रिया संपूर्ण रचना में छायी हुई हैं। भारती जी की राधा को कभी कनु अपना अंतरंग सक्षा लगता हैं। तो कभी रक्षक, कभी लीला बंधु कभी आराध्य और कभी लख्य ऐसा प्रतीत होता हैं कि सरिता के समान उमड घुमड कर प्रिय सांवले समुद्र के पास आई उसने धारण भी किया,फिर भी सदा अबूझे से बने रहे–

विलीन कर लिया
फिर भी आकुल बने रहे
मेरे सांवले समुद्र तुम
आखिर मेरे हो कौन?
हाथ मुझी पर रख मेरी बांहों से
इतिहास तुम्हें ले गया–––। 3

कनु का व्यकितत्व–

भारती जी ने कनु का व्यक्तित्व युग पुरुष के रुप में स्थापित किया हैं। कनु अपने युग का सचेत व्यक्ति है जो एक ओर तो अपने जीवन के राग विरागों के प्रति भी उन्मुख और इमानदार हैं। दूसरी ओर युगधारा के वेग से भी असंपृक्त नहीं है। कनुप्रिया में कृष्ण के दो रुप हमारे सामने उभरते हैं –पहला रुप चिरंतन प्रेमी के रुप में जो अडिग,निर्लिप्त,वीतराग,और निश्छल प्रतीत होता हैं, दूसरा रुप उनका लीला भूमि छोडकर युद्धभूमि में उतरता हैं। कृष्ण को कवि ने आधुनिक मानव के रुप में प्रतिष्ठित किया हैं,जिसे वर्तमान जगत् में युद्ध संघर्ष से व्याप्त विषमताओं से जूझना पडता हैं। कृष्ण के युद्वरत चरित्र को समझने में राधा अपने को असमर्थ पाती हैं। कनु का धर्मोपदेश रुप जिसमें कर्म, स्वकर्म, न्याय, अन्याय, धर्म–अधर्म संबधी अपने निर्णय की घोषणा करना चाहते हैं। कृष्ण ने इतिहास निर्मित चिंता में राधा को भुला दिया। प्रेम के कोमलतम क्षणों को राष्ट्र के निर्माण में लगा दिया। राधा के शब्दों में –

कौन था वह
जिसमें चरम साक्षात्कार का गहरा क्षण
सारे इतिहास से बडा था,सशक्त था 4

भारती जी की कनुप्रिया के दोनों पात्र कनु और कनुप्रिया। कनुप्रिया अभी तक के कृष्ण काव्य परंपरा में चित्रित राधा–कृष्ण से अलग हैं। वे अपनी प्रेम विहवलता के साथ साथ युगांतकारी जीवन मूल्यों की रक्षा करने में समर्थ सिद्ध होते हैं। राधा के मिथक पर आधरित भारतीजी की यह कृति राधा की वैयक्तिक पीडा भाव का बोध कराती हैं। पुराख्या के माध्यम से नवीन तथ्यों और युग की चिंता को सफल रुप में प्रस्तुत करती हैं।

निष्कर्ष –

कनुप्रिया के विषय में डॉ. रामजी तिवारी लिखते हैं –''राधा कृष्ण के प्रेमपूर्ण भाव संवेदन'' के माध्यम से स्त्री पुरुष संबंधों को आधुनिकता के धरातल पर व्यक्त करने के साथ प्रकृति और पुरुष के सनातन संबंधों का भी संकेत किया हैं। युद्व के कुशल संचालक, गीताज्ञान के व्याख्याता, योगेश्वर कृष्ण आत्यंतिक हताश होकर राधा के कंधे का सहारा लेते हैं। युद्व किसी समस्या का समाधान नहीं हैं। इस शाश्वत सत्य से भारती जी हमें साक्षात्कार करती हैं।आज के मानसिक संत्रास, विक्षोभ, विद्रुप और विखराव के समाधान के लिए युद्ध नहीं प्रेम का आश्रय चाहिए। राधा मानवीयता की संजीवनी, शक्ति का प्रतिक रुप में चित्रित की गई हैं। जो आज विकृत संबंधों के लिए विश्वसनीय मानी गयी हैं।

संदर्भ –

1. कनुप्रिया –धर्मवीर भारती,ज्ञानपीठ प्रकाशन, पृष्ठ 32
2. वही – पृष्ठ 33
3. वही – पृष्ठ 34
4. वही – पृष्ठ 35
5. पुराख्यान तथा मिथकीय काव्यभूमि–कनुप्रिया–डॉ सीमा शाह
6. क्षितिज –कुंवर प्रकाशसिंह चव्हाण,उत्तर प्रदेश संस्करण 1968
7. नयी कविता और आधुनिकता बोध– कनुप्रिया के संबंध में–जयनारायण व्यास